अनुवाद

वेदों के मत में इस जगत् से प्रयाण करने के—शुक्ल (प्रकाश) और कृष्ण (अन्धकार), यही दो मार्ग हैं। शुक्ल-गति से गए हुए का पुनरागमन नहीं होता और अन्धकारमय गति से प्रयाण करने वाला संसार में फिर आता है।।२६।।

तात्पर्य

आचार्य बलदेव विद्याभूषण ने 'छान्दोग्य उपनिषद्' से गमनागमन का यही विवरण उद्धृत किया है। इस प्रकार, ज्ञान और कर्म के अधिकारी अनादिकाल से संसार में गमनागमन कर रहे हैं। श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की शरण में न जाने से उनकी मुक्ति नहीं होती।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन।।२७।।

न=नहीं; **एते**=इन दोनों; **सृती**=मार्गों को; **पार्थ**=हे पृथापुत्र अर्जुन; **जानन्**=जानता हुआ; **योगी**=भगवद्भक्त; **मुह्यति**=मोहित होता; **कश्चन**=कोई भी; **तस्मात्**=इसलिए; **सर्वेषु कालेषु**=नित्य-निरन्तर; **योगयुक्तः**=कृष्णभावनाभावित; **भव**=हो; **अर्जुन**=हे अर्जुन।

अनुवाद

इन दोनों मार्गों के तत्त्व को जानकर भक्त कभी मोहित नहीं होता। इसलिए हे अर्जुन! तू सदा भक्तियोग से युक्त हो।।२७।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण अर्जुन को परामर्श देते हैं कि वह इस बात से चिन्तित न हो कि प्राकृत-जगत् को त्याग कर जाता हुआ जीवात्मा इनमें से किसी भी मार्ग को ग्रहण कर सकता है। भगवद्भक्त को यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि संसार से उसका प्रयाण उसकी अपनी इच्छा के अनुसार होगा अथवा दैवयोग से होगा । उसे तो बस सदा कृष्णभावना में दृढ़तापूर्वक निष्ठ रहकर **हरे कृष्ण** जप-कीर्तन करते रहना चाहिए। वह यह जान ले कि इनमें से किस मार्ग की प्राप्ति होगी, यह चिन्ता केवल दुःख का कारण है। कृष्णभावनाभावित होने का सर्वोत्तम साधन भगवत्सेवामृत में तन्मय हो जाना है। इससे भगवद्धाम-प्राप्ति का पथ निरापद, निश्चित और प्रत्यक्ष हो जायगा। श्लोक में आया **योगयुक्त** पद विशेष रूप से सारगर्भित है। जो योग में दृढ़ है, उसकी सब क्रियायें कृष्णभावनाभावित होती हैं। श्रील रूप गोस्वामिचरण का सदुपदेश है कि जगत् में अनासक्त रहे, और सम्पूर्ण कार्य-कलाप कृष्णभावनाभावित हों। इस रीति से परमसिद्धि सुलभ हो जाती है। अतएव इस सब विवरण से भक्त कभी चिन्तित नहीं होता। वह जानता है कि भक्यियोग के प्रताप से भगवद्धाम में उसका प्रवेश निश्चित है।

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।।२८।।